

Padma Shri



SMT. USHA CHAUMAR

Smt. Usha Chaumar is the President of Sulabh International Social Service Organisation.

2. Born on 14th April, 1967, in a traditional Balmiki family in Bharatpur, Rajasthan, Smt. Usha got married at the age of 10. On marriage, she shifted to Alwar carrying with her the same social stigma. In her life upto 2003, she was destined to manually cleaning and physically carrying human excreta, facing appalling hardships and humiliation, leading a life of degradation, sub-human existence and treated as an untouchable. The life she led, was full of indignities and daily insults, not earning enough to have two square meals a day and forced to back breaking task to earn her living. She never knew the joys of childhood. She began scavenging when she was hardly seven and often insisted on getting a broom from her mother so that she too could scavenge. Like the other people in her tribe, who had been engaged in this profession for generations, she would have continued to be so engaged in future too. Both Smt. Usha and her husband were illiterate and never had the opportunity or financial strength to go to school. She was able to earn a meager income, doing scavenging from house to house in Alwar.

3. Dr. Bindeshwar Pathak, Founder, Sulabh International Social Service Organisation (SISSO) who was on a mission to liberate scavengers, came across Smt. Usha during a visit to Alwar. She was offered the opportunity to join the training institute 'NAI DISHA', which had been started by Dr. Pathak at Alwar. She grabbed the opportunity and learnt to prepare pickles, papads, noodles and other eatables. It transformed her life and she soon discovered that the very people in her village, who had treated her as an untouchable, were willing to buy the food products made by her, now that she had stopped scavenging. This also increased her income substantially.

4. Smt. Usha learnt to read and write Hindi and to some extent English as well. Having seen her determination, SISSO gave her a place of pride and appointed her as President of Sulabh International Social Service Organisation in 2007. As the President of Sulabh, she emerged as a leading lady of the community. She visited Durban in South Africa to pay homage to Mahatma Gandhi. She has also visited several other countries. Such was her self-confidence that she even spoke at the United Nations, where a group of scavengers from India was invited to participate in a 'Fashion Show'. After her return from UN, she was invited by then President of India, Smt. Pratibha Devisingh Patil to visit Rashtrapati Bhawan.

5. Smt. Usha has become an inspiring figure for Balmiki community and women in particular. Though basically illiterate, she has been delivering extempore speeches on the contributions of Sulabh in the field of health, hygiene and sanitation, eradication of social evils and Swachh Bharat Abhiyan. She has represented SISSO on many important platforms, in India and abroad and participated in conference and travelled UN New York, France, United Kingdom & South Africa.

6. Smt. Usha is the recipient of numerous award and honours. She has received an award from Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modiji at a function on 2nd October 2015 organized by India Today Group. She was also awarded Sat Paul Mittal National Award for her exemplary contribution for upliftment of manual scavengers and she received appreciation & coverage by national and International print & electronic media.



श्रीमती उषा चौमड

श्रीमती उषा चौमड सुलभ इंटरनेशनल सोशल सर्विस ऑर्गेनाइजेशन की अध्यक्ष हैं।

2. 14 अप्रैल, 1967 में भरतपुर, राजस्थान के एक पारंपरिक बाल्मीकि परिवार में जन्मी श्रीमती उषा का विवाह 10 साल की आयु में हो गया। विवाह के बाद वह जातिगत लांछन को लेकर अलवर आ गई। 2003 तक अपने जीवन के दौरान, उन्हें हाथों से मानव मल साफ करना पड़ा, ढोना पड़ा, विकट मुसीबतों और अपमान झेलना पड़ा, दुर्दशा का सामना करना पड़ा, पशुओं जैसा जीवन जीना पड़ा और उनके साथ अस्पृश्य के रूप में बर्ताव किया गया। उनका जीवन रोजाना की जिल्लत और दुत्कार से भरा हुआ था। वह इतना भी नहीं कमा पाती थी कि 2 जून का खाना भी खा सकें, और मजबूरन जीवन यापन के लिए अपने पुराने काम पर लौट जातीं। वह बचपन की खुशी से बिल्कुल अनभिज्ञ थी। जब वह मुश्किल से 7 वर्ष की थी, मल सफाई के काम में लग गई। वह अपनी मां से अक्सर झाड़ू देने के लिए जिद करती थीं ताकि वह भी मल सफाई का काम कर सकें। अपनी जाति के दूसरे लोगों की तरह, जो सदियों से इसी काम में लगे हुए थे, उन्हें भी भविष्य में इसी काम को करना था। श्रीमती उषा और उनके पति दोनों ही निरक्षर थे और उन्हें न तो स्कूल जाने का मौका मिल पाया और न ही उनकी आर्थिक हैसियत ऐसी थी। वह अलवर में घर-घर जाकर मल सफाई करके नाम मात्र की मजदूरी कमा पाती थी।
3. सुलभ इंटरनेशनल सोशल सर्विस ऑर्गेनाइजेशन के संस्थापक, डॉ बिदेश्वर पाठक मल ढोने से मुक्ति के एक अभियान पर अलवर आए थे। इस दौरान वह श्रीमती उषा से मिले। उन्हें अलवर में डॉक्टर पाठक द्वारा शुरू किए गए प्रशिक्षण संस्थान 'नई दिशा' में शामिल होने की पेशकश की गई। उन्होंने इस पेशकश को तुरंत स्वीकार कर लिया और अचार, पापड़, नूडल्स और खाने की दूसरी चीजें बनाना सीखा। इससे उनके जीवन में क्रांतिकारी बदलाव आया और जल्द ही उन्होंने पाया कि उनके अपने ही गांव के लोग, जो उनके साथ अस्पृश्य के रूप में बर्ताव करते थे, अब उनसे खाद्य उत्पाद खरीदने के इच्छुक थे। अब उन्होंने मैला ढोना बंद कर दिया इससे उनकी आय भी काफी बढ़ गई।
4. श्रीमती उषा ने हिंदी और कुछ हद तक अंगरेजी पढ़ना-लिखना सीखा। उनकी संकल्पशक्ति को देखकर सुलभ इंटरनेशनल सोशल सर्विस ऑर्गेनाइजेशन ने उन्हें गौरवशाली पद प्रदान करते हुए, 2007 में सुलभ इंटरनेशनल सोशल सर्विस ऑर्गेनाइजेशन की अध्यक्ष नियुक्त किया। सुलभ की अध्यक्ष के तौर पर, वह अपने समुदाय की एक अग्रणी महिला बन गई। उन्होंने महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए दक्षिण अफ्रीका के डरबन की यात्रा की। उन्होंने अनेक दूसरे देशों की भी यात्रा की है। उनमें इतना अधिक आत्मविश्वास था कि उन्होंने संयुक्त राष्ट्र के एक समारोह में भाषण दिया। इसमें फैशन शो में भाग लेने के लिए भारत की मैला ढोने वाली महिलाओं को आमंत्रित किया गया था। संयुक्त राष्ट्र से लौटने के बाद, उन्हें भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटील ने राष्ट्रपति भवन आने का निमंत्रण दिया।
5. श्रीमती उषा बाल्मीकि समुदाय और खासकर महिलाओं के लिए एक प्रेरक शख्सियत बन गई हैं। हालांकि वह मूल रूप से निरक्षर हैं लेकिन स्वास्थ्य, स्वच्छता और साफ-सफाई, सामाजिक कुप्रथा की समाप्ति तथा स्वच्छ भारत अभियान के क्षेत्र में सुलभ के योगदान पर धारा प्रवाह अपनी बात रखती हैं। उन्होंने भारत और विदेश के अनेक महत्वपूर्ण मंचों पर सुलभ इंटरनेशनल सोशल सर्विस ऑर्गेनाइजेशन का प्रतिनिधित्व किया है तथा सम्मेलनों में भाग लिया है और संयुक्त राष्ट्र न्यूयॉर्क, फ्रांस, यूनाइटेड किंगडम और दक्षिण अफ्रीका की यात्रा की हैं।
6. श्रीमती उषा को अनेक पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं। उन्हें इंडिया टुडे ग्रुप द्वारा 2 अक्टूबर, 2015 को आयोजित एक समारोह में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने पुरस्कार प्रदान किया है। उन्हें मैला ढोने वालों के उत्थान में अनुकरणीय योगदान के लिए सतपाल मित्तल राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया तथा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा उनकी सराहना की गई और उन्हें अपनी खबरों में प्रमुख स्थान दिया।